जाओ
और
परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो

परमेश्वर के राज्य

का स्वरूप

द्वारा

डोटा

नियमावली 11

समूह के अगुवों के लिए

चौथा संशोधित संस्करण 2016

प्रस्तावना

राज्य का सुसमाचार क्या है?

राज्य का सुसमाचार, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी है। सामान्य तौर पर यदि देखें तो परमेश्वर के राज्य का अर्थ अनन्तता से अनन्तता तक हर एक सजीव और निर्जीव वस्तु पर परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (भजन 24:1; 145:13)। खास तौर पर कहें तो, परमेश्वर का राज्य, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (मत्ती 28:18)। यह राज्य मसीह के उद्धार के सम्पूर्ण कार्यों (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में उन कार्यों के प्रयोग पर आधरित होता है (रोमियों 14:17)। इस राज्य को विश्वासियों द्वारा मन में स्वीकार किया जाता (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट हुआ हैः प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विश्वासियों के सम्पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), एक कलीसिया के रूप में इस धरती पर पाये जाने वाले विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), विश्वासियों के भले कामों (प्रभाव) के द्वारा मानवीय समाज के हर क्षेत्रा में (मत्ती 25:34-40), और अन्त में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मुक्त जगत या नये स्वर्ग और नयी धरती पर (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

राज्य का सुसमाचार कब प्रचार किया गया?

उसके प्रथम आगमन पर, यीशु मसीह ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया (मरकुस 1:14-15; मत्ती 4:23)। यीशु ने करीब पचास दृष्टान्त कहे और वे सभी प्रभु के राज्य से सम्बन्धित थे। इन दृष्टान्तों में, यीशु हमें उनकी विशेषताओं के बारे में बताते हैं और खास तौर पर यह कि परमेश्वर के राज्य की रीतियों के अनुसार हम कैसे उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसमें किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अन्त में, यीशु ने कहा, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14)। इस तरह से, धेरती पर मसीही कलीसिया की स्थापना करने के बाद, मसीही लोग राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23,31)। सारे मसीहियों का लक्ष्य यीशु मसीह की प्रभुता का प्रचार करना, प्रचार की हुई शिक्षाओं का अभ्यास करना (मत्ती 23:3) और उनके तौर तरीकों को परमेश्वर के राज्य के तौर तरीकों से बदल देना है।

तैयार अगुवों और मज़दूरों को बढ़ाना

यीशु के अनुसार परमेश्वर के राज्य में "समय की मांग" तैयार अगुवे व मज़दूरों की संख्या है। एक तरफः "इसलिए खेत के स्वामी से *विनती करो* कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे" (मत्ती 9:38)। और दूसरी तरफे "ज्यादा से ज्यादा मसीहियों को *तैयार करो* ताकि वे मसीह की कलीसिया में सेवक बन सकें" (मत्ती 4:19; मत्ती 10:7; इपिफसियों 4:12)। उन्हें शिष्यता के समूह के अगुवे रूप में, घरेलू कलीसिया के अगुवे, कलीसिया के प्राचीन के रूप में, दूतों (नयी कलीसिया के रोपणकर्ता के रूप में) ठहरा दें।

डोटा पाठ्यक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता हैः

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छः महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) माप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम को छः दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे "पढें" "खोजें व चर्चा करें" समूह के अगुवें को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. "नोट्स" प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का सारांश बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठ्यक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण पाठेयक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्याथी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में तेजी से मण्डलियों की (घरेलू कलीसिया) संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं (प्रेरितों 6:7)। यीशु ने कहा, मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधेलोक के फाटक उसमें प्रबल नहीं होगें! (मत्ती 16:18)! परमेश्वर को महिमा मिले! फ्क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहेः आमीन! (रोमियों 11:36)

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05-10-1993 में हुआ जब यह पाठ्यक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, "Discipleship training On The Air", अर्थात चीन पर रोडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण)**1996** में (प्रथम संस्करण)। **2016** में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार
मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अुनवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश
इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उददेश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठ्यक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज़्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकध्यर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 25 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 84,90,91 और 92)
स्मरण करना (1. परमेश्वर अतुल्य हैंः यशायाह 40:25-26)
शिक्षा देना *(परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का आज्ञापालन करने के विषय में दृष्टांत**)
अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का दृष्टांत (मत्ती 15:14) + **बुद्धिमान और मूर्ख द्वारा घर का बनाया जाना** (मत्ती 7:24-27)

अध्याय 26 *शान्त समय को साझा करना* (भजन. 101,103,104 और 107)
स्मरण करना (2. परमेश्वर महिमामय हैं : 1इतिहास 29:11)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 7:1-13)

अध्याय 27 *शान्त समय को साझा करना* (भजन. 115, 119:1-88, 119:89-176, 139)
स्मरण करना (3. परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं : इफिसियों 1:11-12)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन* : **परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में दृष्टांत)**
दूल्हा, पैबन्द लगे वस्त्र और मशकें (मत्ती 9:14-17; मरकुस 2:18-22; लूका 5:33-39)

अध्याय 28 *शान्त समय को साझा करना* (भजन. 141,143,145 और146)
स्मरण करना (4. परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं : इब्रानियों 4:13)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों के पत्री*/ रोमियों 7:14-25)

अध्याय 29 *शान्त समय को साझा करना* (नीतिवचन 1,3,4 और 5)
स्मरण करना (5. परमेश्वर सर्व-शक्तिमान हैं : यिर्मयाह 32:17)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन* : **परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करने के विषय में दृष्टांत)**
मध्यस्थता करने वाला मित्र (लूका 11:5-10) + **दृढ़ विधवा** (लूका 18:1-8)

अध्याय 30 *शान्त समय को साझा करना* (नीतिवचन 6,7,8 और 10)
स्मरण करना (श्रृंखला 'ञ' "परमेश्वर की महानता" का पुनरावलोकन)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 8:1-17)

अध्याय 31 *शान्त समय को साझा करना* (नीतिवचन 15,16,17 और 19)
स्मरण करना (11. रोमियों 8:1)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में दृष्टान्त) वैद्य और बीमार** (मत्ती 9:9-13; मरकुस 2-17; लूका 5:27-32) + **पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति** (मत्ती 5:13-16)

अध्याय 32 *शान्त समय को साझा करना* (नीतिवचन 27,28,29 और 31)
स्मरण करना (12. रोमियों 8:38-39)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 8:18-39)

अध्याय 33 *शान्त समय को साझा करना* (यशायाह 1,2,3 और 4)
स्मरण करना (13. रोमियों 10:9-10)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन* : **परमेश्वर के राज्य में शिष्यता के बारे में दृष्टान्त)**
उतावला निर्माणकर्ता (लूका 14:28-30) + **लापरवाह राजा** (लूका 14:30-31)

अध्याय 34 *शान्त समय को साझा करना* (यशायाह 5,6,7 और 8)
स्मरण करना (14. रोमियों 10:12)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों अध्याय 9)

अध्याय 35 *शान्त समय को साझा करना* (यशायाह 9,10,11 और 40)
स्मरण करना (15. रोमियों 10:17)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में दृष्टांत) मूर्ख धनवान का दृष्टांत** (मत्ती 12:13-21) + **धनवान व्यक्ति और गरीब लाज़र** (लूका 16:19-31)

अध्याय 36 शान्त समय को साझा करना (यशायाह 41,42,45,46)
स्मरण करना (रोमियों के 5 प्रमुख पदों का पुनरावलोकन करें)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों अध्याय 10)

परिशिष्ट 9 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **मांगने वाला पुत्र** (मत्ती 7:7-11)

परिशिष्ट 10 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **गृहस्थ** (मत्ती 13:51-52) **+ मजदूर और फसल** (मत्ती 9:35-38)

परिशिष्ट 11 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **हल पर हाथ रखना** (मत्ती 9:61-62)

परिशिष्ट 12 *व्यवस्था।* **बाइबल में पाई जाने वाली व्यवस्था**

परिशिष्ट 13 *व्यवस्था।* **मसीह व्यवस्था का उद्देश्य और अंत**

वचन याद करने का तरीकाः समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9 के परिशिष्ट1 में देखिये। शान्त समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने, मनन करने व वचनों को याद करने के लिए (नियमावली 1 परिशिष्टों में देखें)

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

<u>सुझावित कार्यक्रम</u>

09.00–09.30	आराधना (बड़े समूह के साथ)
09.30–11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
11.30–13.00	बाइबल अध्ययन(छोटे समूह के साथ)
	अन्तराल
16.00–17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
17.30–17:45	मनन(बड़े समूह के साथ) व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45–18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30–19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00–19:45	बांटना (बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 25+26)
प्रार्थना
शिक्षा देना *(परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का आज्ञापालन करने के विषय में दृष्टान्त)**
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 7:1–13)
स्मरण करना (यशायाह 40:25–26 + 1इतिहास 29:11)
बाइबल पठन (भजन. 84,90,91,92,101,103,104,107)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: भजन. 103)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 2 (अध्याय 27+28)
प्रार्थना
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में दृष्टान्त)**
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 7:14–25)
स्मरण करना (इफिसियों 1:11–12 + इब्रानियों 4:13)
बाइबल पठन (भजन. 115,119,139,141,143,145,146)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: भजन. 139)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय 29+30)
प्रार्थना
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करने विषय में दृष्टान्त**)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 8:1–17)
स्मरण करना (यिर्मयाह 32:17 + श्रृंखला ञ का पुनरावलोकन)
बाइबल पठन (नीतिवचन 1,3,4,5,6,7,8,10)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: नीतिवचन 3:1–35)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 19+20)
प्रार्थना
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में दृष्टान्त)**
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 8:18–39)
स्मरण करना (रोमियों 8:1 + रोमियों 8:38–39)
बाइबल पठन (नीतिवचन 15,16,17,19,27,28,29,31)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: नीतिवचन 15:1–33)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 33+34)
प्रार्थना
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में शिष्यता के बारे में दृष्टान्त)**
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों अध्याय 9)
स्मरण करना (रोमियों 10:9–10 + रोमियों 10:12)
बाइबल पठन (यशायाह 1,2,3,4,5,6,7,8)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: यशायाह 5:1–30)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6 (अध्याय 35+36)
प्रार्थना
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के विषय में दृष्टान्त)**
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों अध्याय 10)
स्मरण करना (रोमियों 10:17+ पुनरावलोकन)
बाइबल पठन (यशायाह 9,10,11,40,41,42,45,46)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: यशायाह 40:1–31)
बांटना और प्रार्थना करना

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 9	*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **मांगने वाला पुत्र** (मत्ती 7:7–11)
परिशिष्ट 10	*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **गृहस्थ** (मत्ती 13:51–52)
	+ मजदूर और फसल (मत्ती 9:35–38)
परिशिष्ट 11	*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **हल पर हाथ रखना** (मत्ती 9:61–62)
परिशिष्ट 12	*व्यवस्था।* **बाइबल में पाई जाने वाली व्यवस्था**
परिशिष्ट 13	*व्यवस्था।* **मसीह व्यवस्था का उद्देश्य और अंत**